जादुई उपवन

जादुई उपवन

एक समय की बात है, कहीं एक दूर देश में, एक लंबे-चौड़े घास के मैदान के बीच में दो सच्चे मित्र रहते थे.

उन में से एक मित्र अपनी थोड़ी सी भूमि पर खेती करता था. वह अकेला था, बस उसकी बेटी उबियाना उसके साथ रहती थी. भोर से लेकर सूर्यास्त तक वह दोनों अपने खेत में हल चलाते थे, बीज बोते थे और पौधों को पानी देते थे.
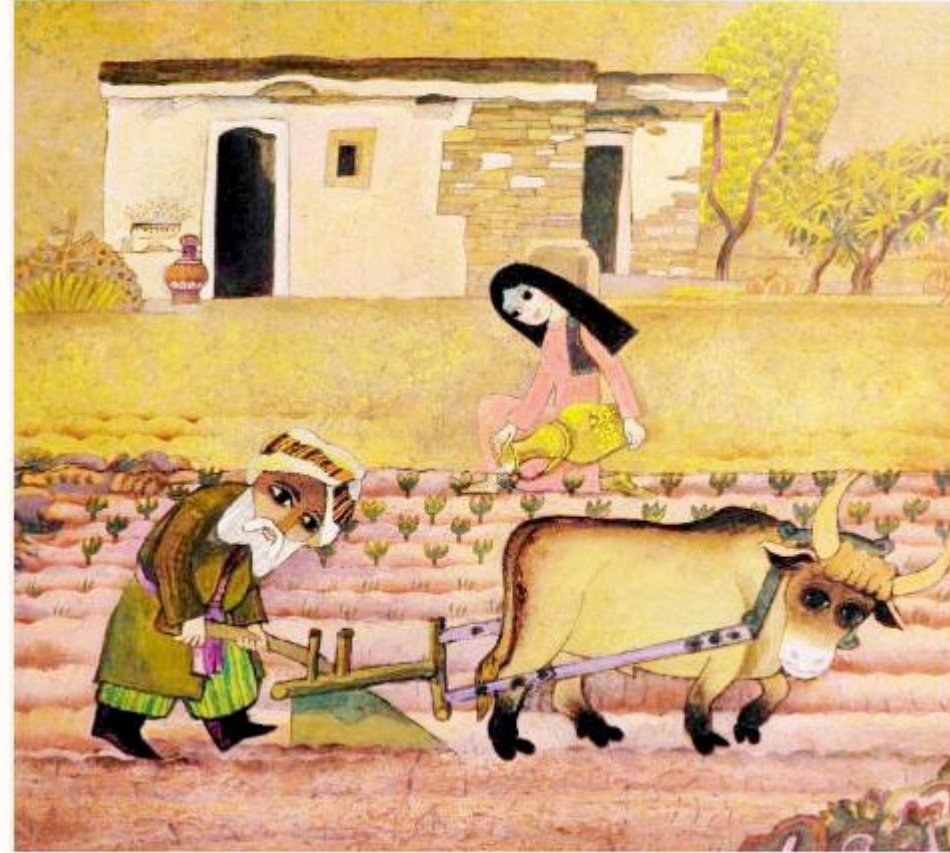
दूसरा मित्र भी विधुर था. वह निकट ही रहता था और अपने बेटे असन के साथ मिलकर भेड़ों का एक छोटा सा झुंड चराता था. वह दोनों अपनी भेड़ों का पूरा ध्यान रखते थे और साल में एक बार उनकी ऊन कतर कर बेच देते थे. बाकी दिन वह भेड़ों के दूध से पनीर बना लेते थे और कभी-कभी भेड़ की अच्छी खाल महान खान के दूर-दराज़ नगर में बेच देते थे.

किसान और गड़ेरिया धनवान नहीं थे, लेकिन जीवनयापन के लिए उनके पास पर्याप्त धन था. और जब दो मित्र अपना थोड़ा धन आपस में बाँट लेते हैं, तो उन्हें किसी बात की कमी नहीं होती.

बचपन से ही उनके बच्चे एक साथ खेले-कूदे थे. और दोनों पिता यह देख कर बहुत प्रसन्न थे कि, आयु के बढ़ने के साथ, असन और उबियाना का एक दूसरे के लिए बचपन का लगाव प्यार में परिवर्तित हो रहा था. दोनों एक दूसरे से झिझकने लगे थे और बड़ी विनम्रता से व्यवहार करने लगे थे.

इस तरह चारों लोग बड़े प्रेम भाव से सीधा-सादा और संतुष्ट जीवन व्यतीत कर रहे थे.

लेकिन फिर एक ग्रीष्म आया जब वहां भयंकर अकाल पड़ा.

हर दिन अग्नि के एक गोले समान सूरज आकाश में चमकता और उसकी भीषण गर्मी में धरती सूखती गयी.

तपती धूप ने किसान की खेती को सुखा दिया. उस घास के मैदान की सबसे सख्त घास भी सूख कर लुप्त हो गयी. कुँए का पानी घट कर बहुत नीचे चला गया. लेकिन न बादल आये और न वर्षा हुई.
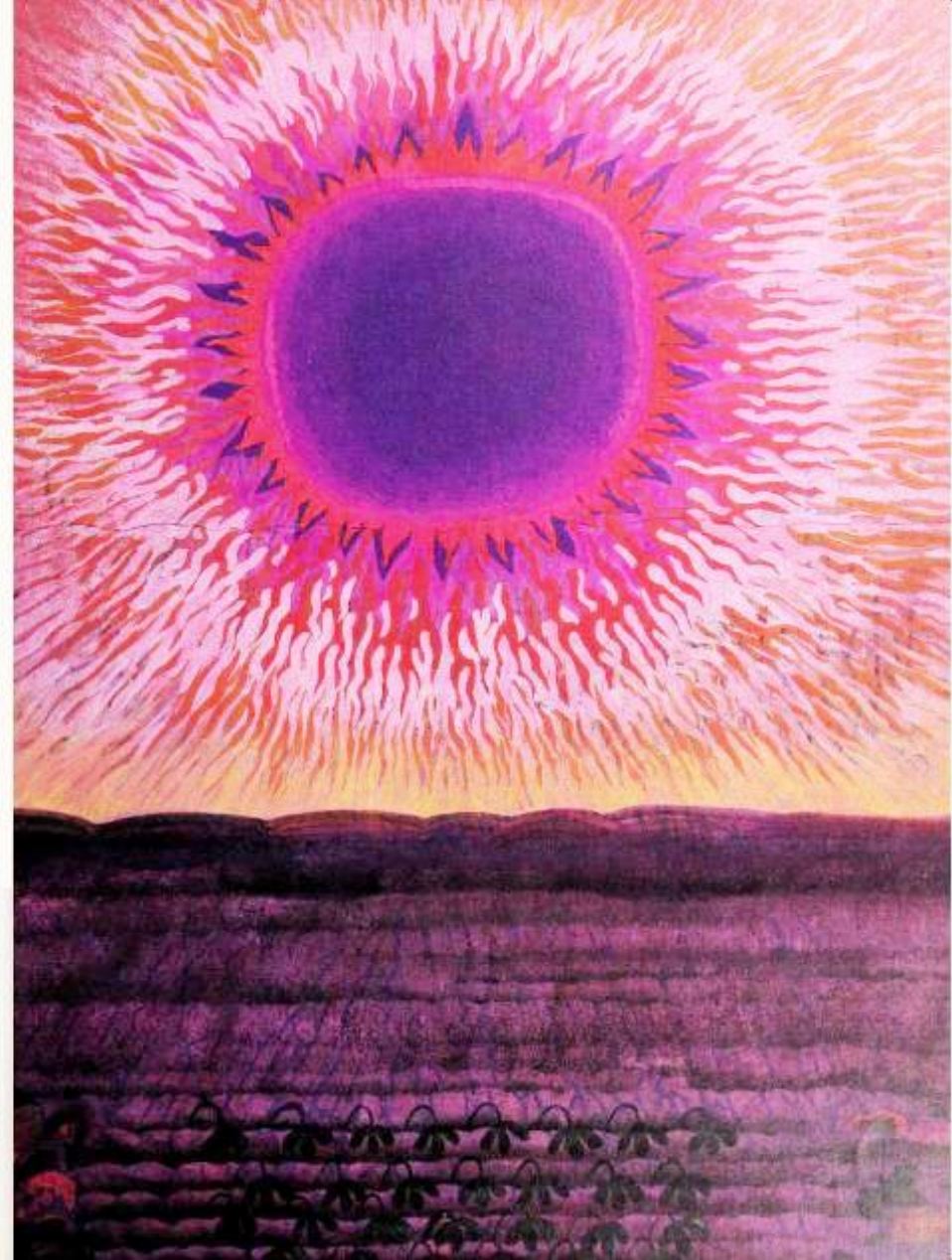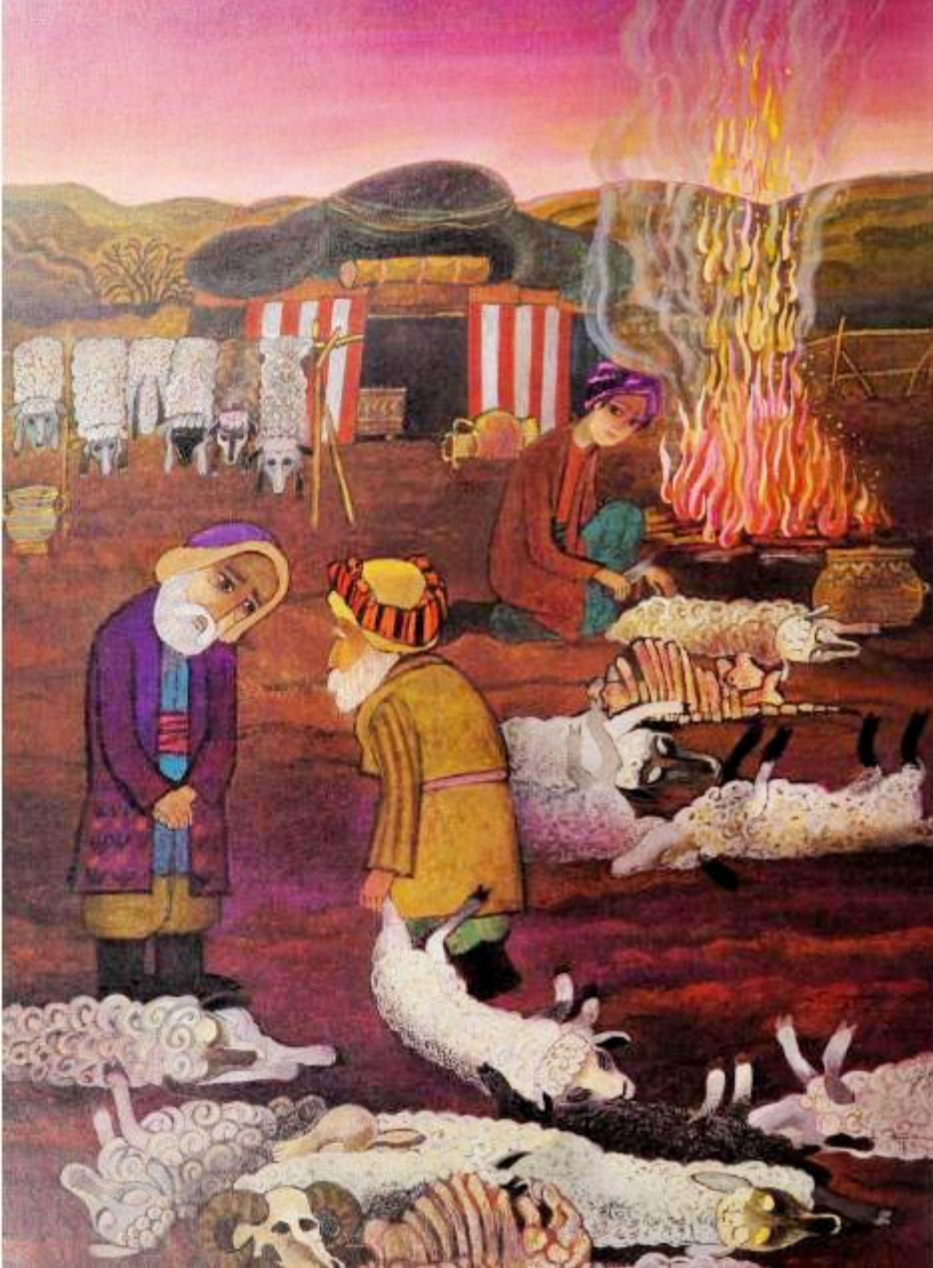
गड़ेरिये की भेड़ों के खाने के लिये कुछ भी न बचा और भूख और प्यास से एक-एक कर उसकी भेड़ें मर गईं.

एक दिन चारों ओर मौत का सन्नाटा छाया हुआ था. सिर्फ आग में जलती मरी हुई भेड़ों की लाशों से चटकने की आवाज़ ही सुनाई दे रही थी. सब लोग भयभीत थे. जैसे कि स्थिति पहले ही बहुत खराब न थी, उससे भी बड़ी मुसीबत उस विशाल मैदान की ओर आ रही थी.

एक बवंडर के समान उन्होंने हमला किया.

अपने घोड़ों से उतरे बिना ही, खान के घुड़सवारों ने सारे खेत रौंद डाले, गड़ेरिये के कुटिया को ध्वस्त कर दिया और जो कुछ भी उन्हें मिला उसे उठा कर ले गये. जिस तरह अचानक वह आये थे उसी तरह दनदनाते हुए वह लौट गये और अपने पीछे छोड़ गये विनाश और आतंक. सब भयभीत थे कि कहीं वह फिर से हमला न कर बैठें.

गड़ेरिये और असन ने अपना सब कुछ खो दिया. उनके पास खाने को कुछ न था. भेड़ें खरीदने के लिए कोई धन भी न था.

लेकिन किसान की स्थिति थोड़ी अच्छी थी, उसने अपने मित्र से कहा, “कई वर्षों तक हमने अपने प्रेम का आदान-प्रदान किया है, अब मैं अपना खाना तुम्हारे साथ बाँटूगा और तुम इनकार नहीं कर सकते.”

उसी दिन उन्होंने गड़ेरिये के घर का बचाखुचा सामान इकट्ठा किया और उठाकर किसान की भूमि पर ले आये. उन्होंने तय किया कि अब वह मिलकर खेती करेंगे. जब उन्होंने किसान के घर के निकट गड़ेरिये की कुटिया बना ली, तब किसान ने उन्हें खेती करने के लिए सामान दिया और सब मिलकर बीज बोने के लिए भूमि को तैयार करने लगे. अब चूँकि चार लोग एक साथ काम कर रहे थे, अपने छोटे से खेत को वह बड़ा करने में सफल हुए. उनका खेत उतना बड़ा हो गया जितना बड़ा खेत कभी उबियाना के परदादा का था.

एक दिन जब असन का पिता खेत के नये भाग में खुदाई कर रहा था तो सोने के सिक्कों से भरा एक बर्तन ज़मीन के अंदर उसे मिला. वह तुरंत समझ गया कि परिवार का वह खज़ाना उसे मिल गया था जो वर्षों से ज़मीन में गड़ा हुआ था. वह बहुत प्रसन्न हुआ और, अपने मित्र को उसका खज़ाना देने के लिए, भाग कर उसके पास आया. लेकिन किसान ने खज़ाना लेने से मना कर दिया.

“धरती के उपहार उसी के लिए होते हैं जो उस पर अपनी मेहनत का पसीना बहाता है. उस जगह तुम ने मेहनत की थी, धरती ने तुम्हें उसका पुरस्कार दिया है. यह खज़ाना तुम्हारा है!”

“उस धरती पर सदा तुम्हारे पूर्वजों ने ही खेती की थी. वह भूमि तुम्हारी है और यह खज़ाना भी तुम्हारा है,” गड़ेरिये ने कहा और अपने दोस्त के हाथ में वह बर्तन दे दिया. लेकिन किसान ने वह धन नहीं लिया.

दोनों मित्र आपस में बहुत देर तक बहस करते रहे कि सोने के सिक्कों का असली स्वामी कौन था. सिक्कों से भरा बर्तन वह एक-दूसरे को देते रहे. आखिरकार जब गड़ेरिये के हाथ थकने लगे तो उसने इस बहस को खत्म कर दिया और सारा धन उबियाना को उपहार स्वरूप दे दिया.

किसान तब समझ गया कि उसे क्या करना होगा. अपनी प्रिय बेटी और सोने से भरे बर्तन को वह असन के पास ले आया और दोनों को उसे सौंप दिया.

बस निर्णय हो गया! दोनों कितने प्रसन्न थे! एक दूसरे से कितना प्यार करते थे!
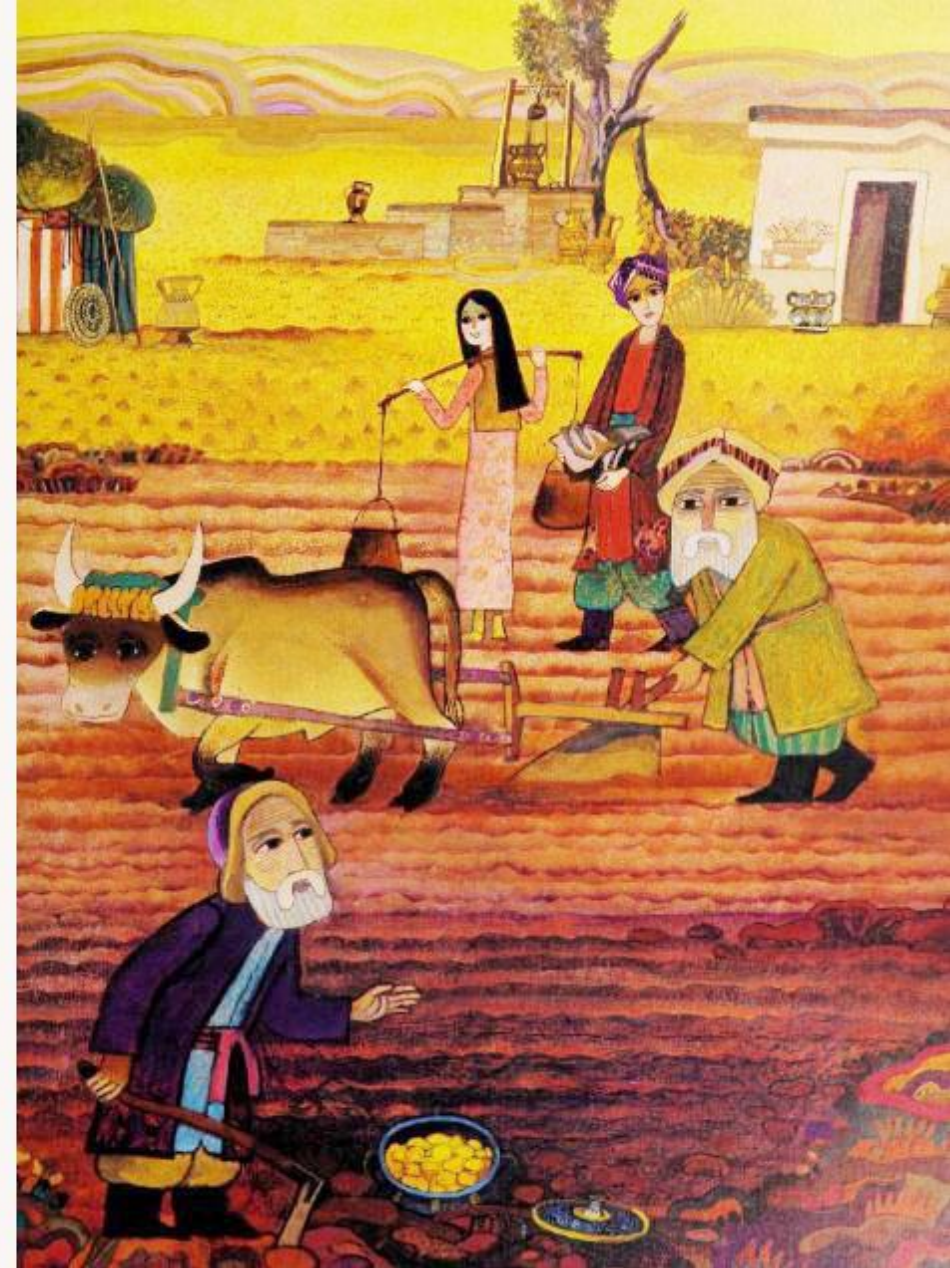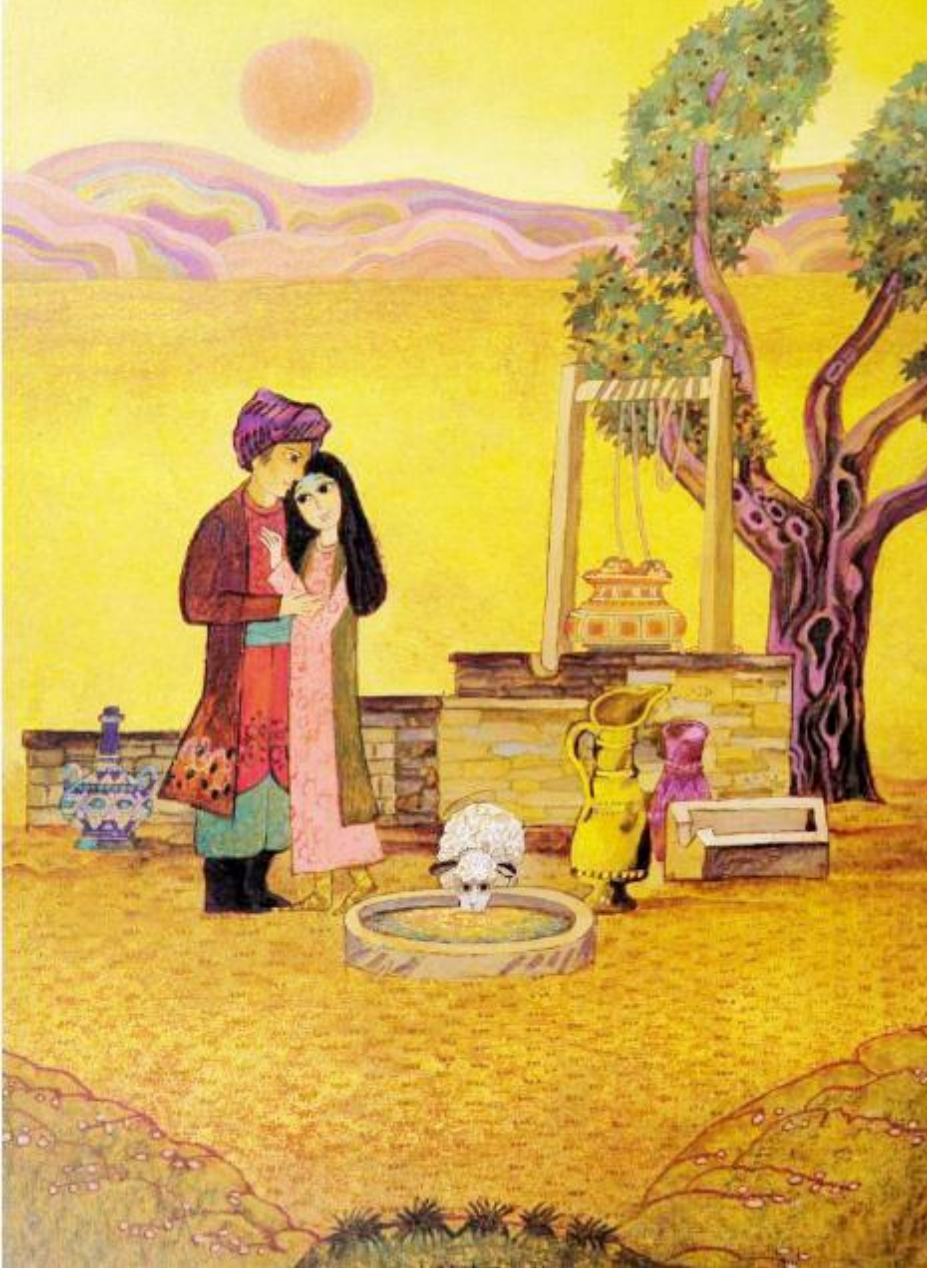
दोनों की मन चाही इच्छा पूरी हुई. दोनों को उनके पिताओं ने आशीर्वाद दिया और उसी दिन उनका विवाह हो गया. दोनों पिता गड़ेरिये की कुटिया में रहने के लिए आ गये ताकि किसान के घर में नव-विवाहित जोड़ा मज़े से रह सके.

इस सारी उत्तेजना और प्रसन्नता के बीच, भूमि से निकले खज़ाने को वह भूल ही गये. अँधेरा होने के बाद गड़ेरिये को उस खज़ाने का ध्यान आया. वह कुटिया से बाहर आया और बर्तन को उठा कर भीतर ले आया.

अगली सुबह दोनों वृद्ध किसान के घर के अंदर गये और सारा धन अपने बच्चों को दे दिया. लेकिन असन और उबियाना ने इनकार कर, उन्हें हैरान कर दिया. उन्हें एक-दूसरे का प्यार मिल गया था, अब कुछ और पाने की लालसा उनके मन में न थी.

तो सोने से भरे बर्तन का क्या किया जा सकता था?

वह उस धन से भेड़ों का एक झुंड खरीद सकते थे.....

लेकिन अगर फिर से अकाल पड़ा तो भेड़ें कष्ट पा कर मर जायेंगी.

या वह बहुमूल्य वस्तुयें खरीद सकते थे.......

लेकिन ऐसी वस्तुओं का वहां क्या उपयोग था?

अगर नगर में एक पक्का घर ले लिया जाए तो......

लेकिन इस खुले घास के मैदान के स्वतंत्र जीवन को छोड़ कर उस नगर में कौन रहना चाहेगा जहां खान के आदमी लोगों पर अत्याचार करते थे? ऐसी कौन सी वस्तु थी जो उनके पास नहीं थी?

काश, अकाल इतना भयंकर न होता! लेकिन सूर्य के ताप को सोने के सिक्कों से रोका नहीं जा सकता था और न ही पैसों से वर्षा करवाई जा सकती थी.

जैसे ही वह सब बैठे चुपचाप सोच रहे थे, उबियाना की दृष्टि उस पुराने गलीचे पर पड़ी जो उनके पीछे दीवार पर लटका था और जिस पर एक सुंदर, छायादार उपवन का चित्र बना था.

“हम इस तरह इस धन का उपयोग कर सकते हैं!” उसने प्रसन्नता से कहा.

जब दूसरों ने देखा कि वह किस ओर संकेत कर रही थी तो वह समझ गये कि वह क्या चाहती थी.

बेशक! यह खजाना धरती को वापस लौटा देना चाहिये. वह सबसे अनमोल पेड़ों के बीज और अंकुर खरीदेंगे और ऐसे पेड़ों का उपवन लगायेंगे जिनकी जड़ें धरती में बहुत गहराई तक चली जाती हैं. जब यह नन्हे पौधे बड़े होंगे तो लोगों का और आसपास की धरती का तपती धूप से बचाव करेंगे.
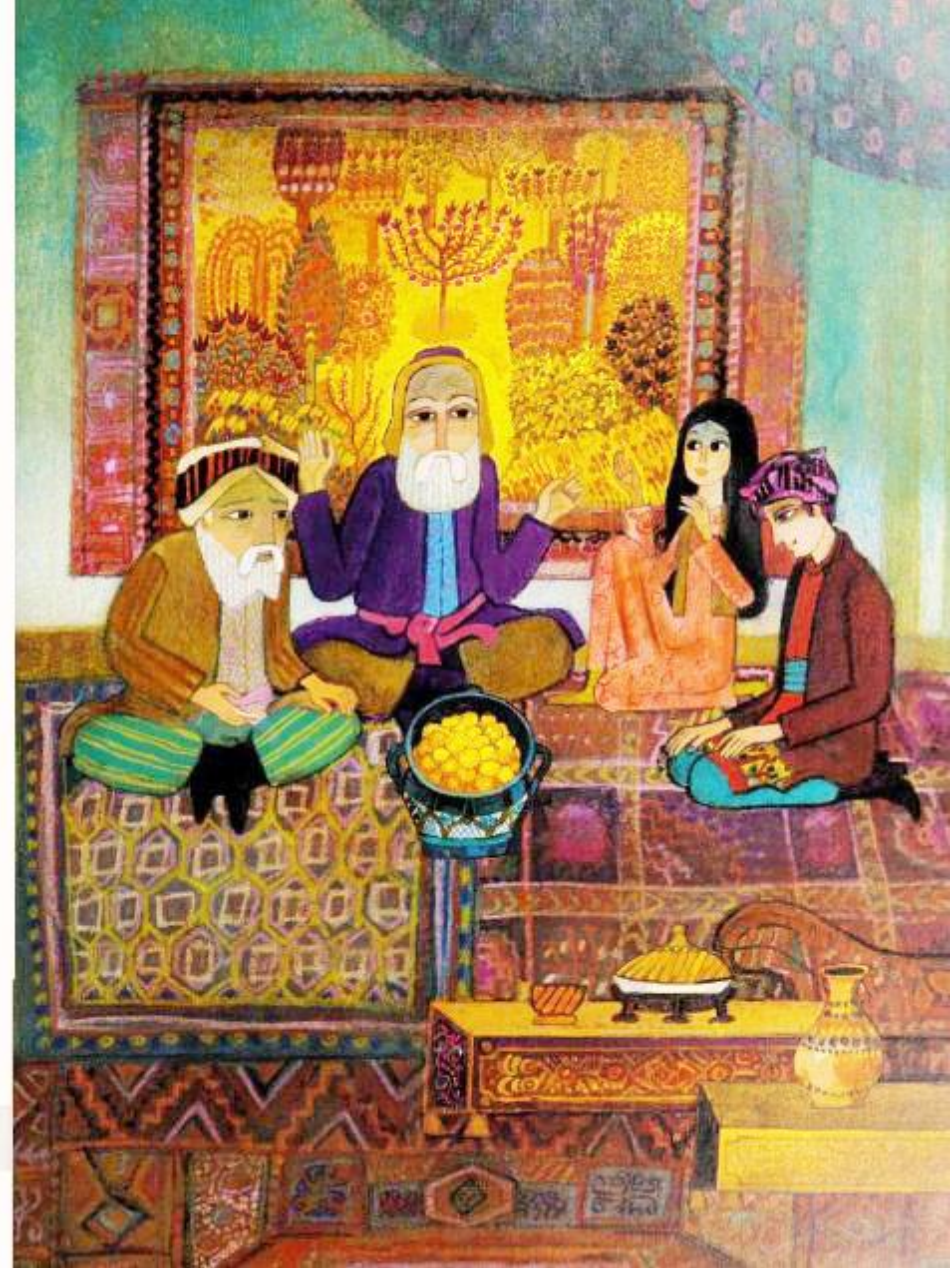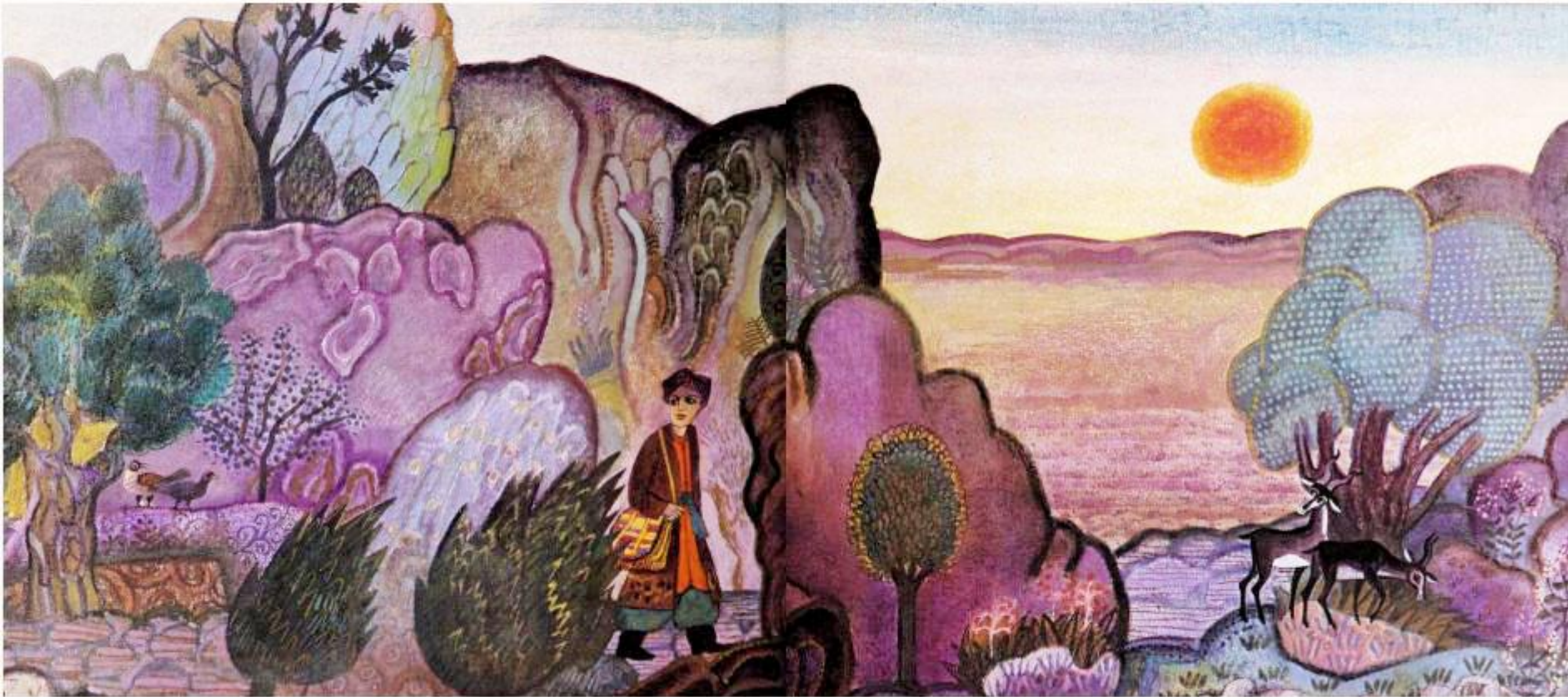
उन सब के ऐसा निश्चय करने के उपरान्त असन सारा धन लेकर खान के नगर की ओर चल दिया. अपने पिता के साथ कई बार वह पनीर और ऊन और भेड़ों की खालें बेचने के लिए वह नगर गया था. लेकिन इस बार वह अकेला ही जा रहा था.

वह चलता रहा, चलता रहा.

पहले वह सपाट मैदान के बीच से गया, फिर उसने शुष्क धरती, जहाँ घास भी सख्त और नुकीली और छोटी थी, पार की.
फिर उसने उस धरती को पार किया
जहां छोटी-छोटी झाड़ियाँ थीं.

रात के समय जहां भी असन को थोड़ा सा आसरा मिलता वहीं वह सो जाता.

सिर्फ चाँद उसका साथ देता......

और साथ देते सितारे,

और खामोशी,

और उसके मन का डर.
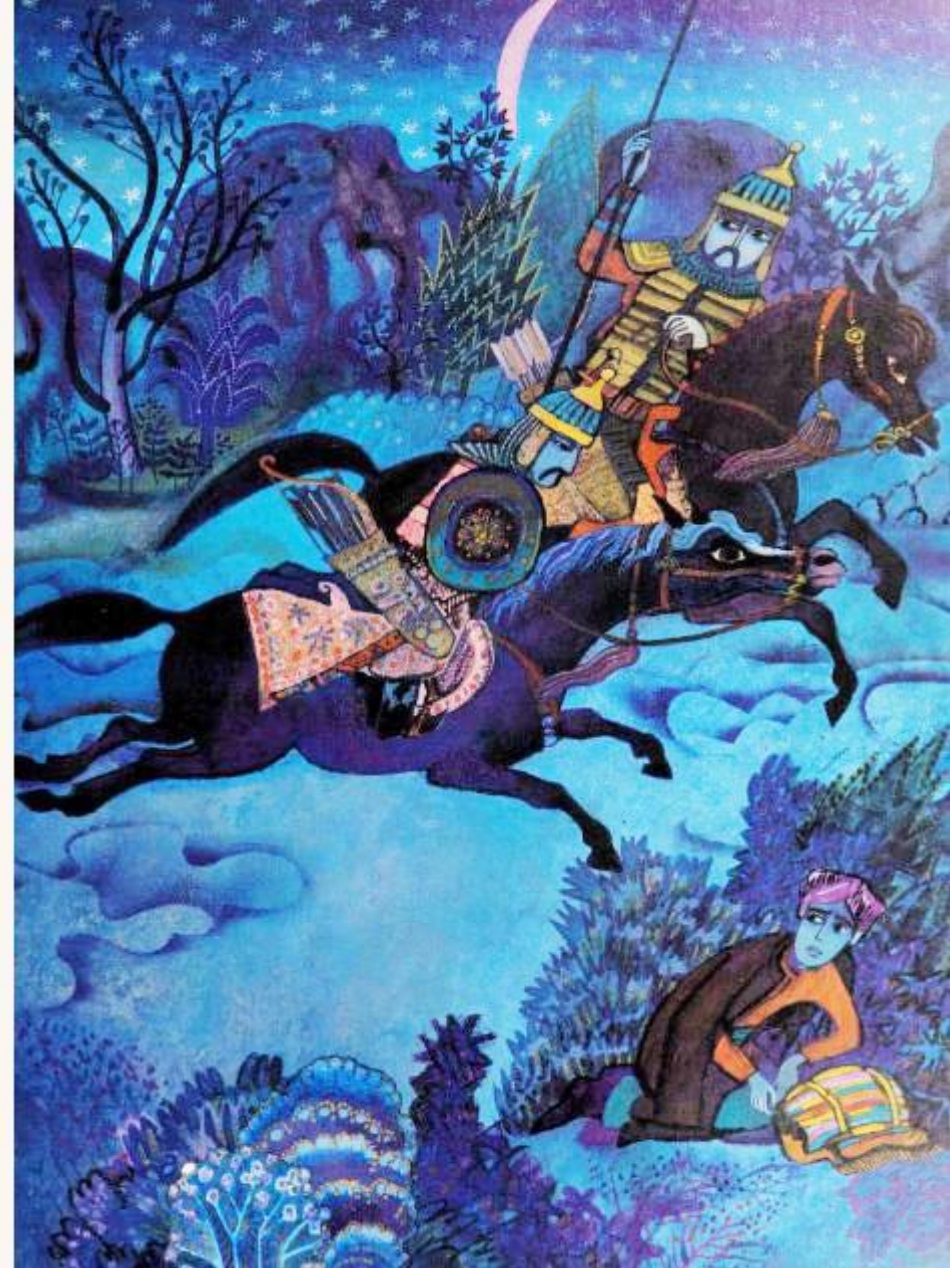
आखिरकार वह नगर पहुँच गया.

नगर की दीवार के साथ लगी एक दूकान दिखाई दी. वहां नर्म और गोल टोकरियों में वह अंकुर और बीज थे जिन से उनका छायादार उपवन बनना था.

उसने सबसे अच्छे बीज और अंकुर चुने. वह उन बीजों और अंकुरों को खरीदने ही वाला था कि कुछ अजीब और दुख भरी आवाज़ें उसने सुनी. एक लम्बा काफिला रेगिस्तान की ओर से आ रहा था. उस काफिले के हर ऊँट पर पिंजरे थे. उन पिंजरों में अनोखे पक्षी बंद थे.

असन झटपट ऊंटों के पास आया और उन पक्षियों की सुन्दरता से मोहित होकर उन्हें एकटक देखने लगा. ऐसे अनोखे पक्षी कहाँ पाए जाते थे? इन्हें कहाँ ले जाया जा रहा था? और यह सब पक्षी इतनी दुःख भरी आवाज़ें क्यों निकाल रहे थे? यह जान कर उसका मन दहल गया कि इन पक्षियों को मार कर खान की दावत के लिए पकाया जाना था.
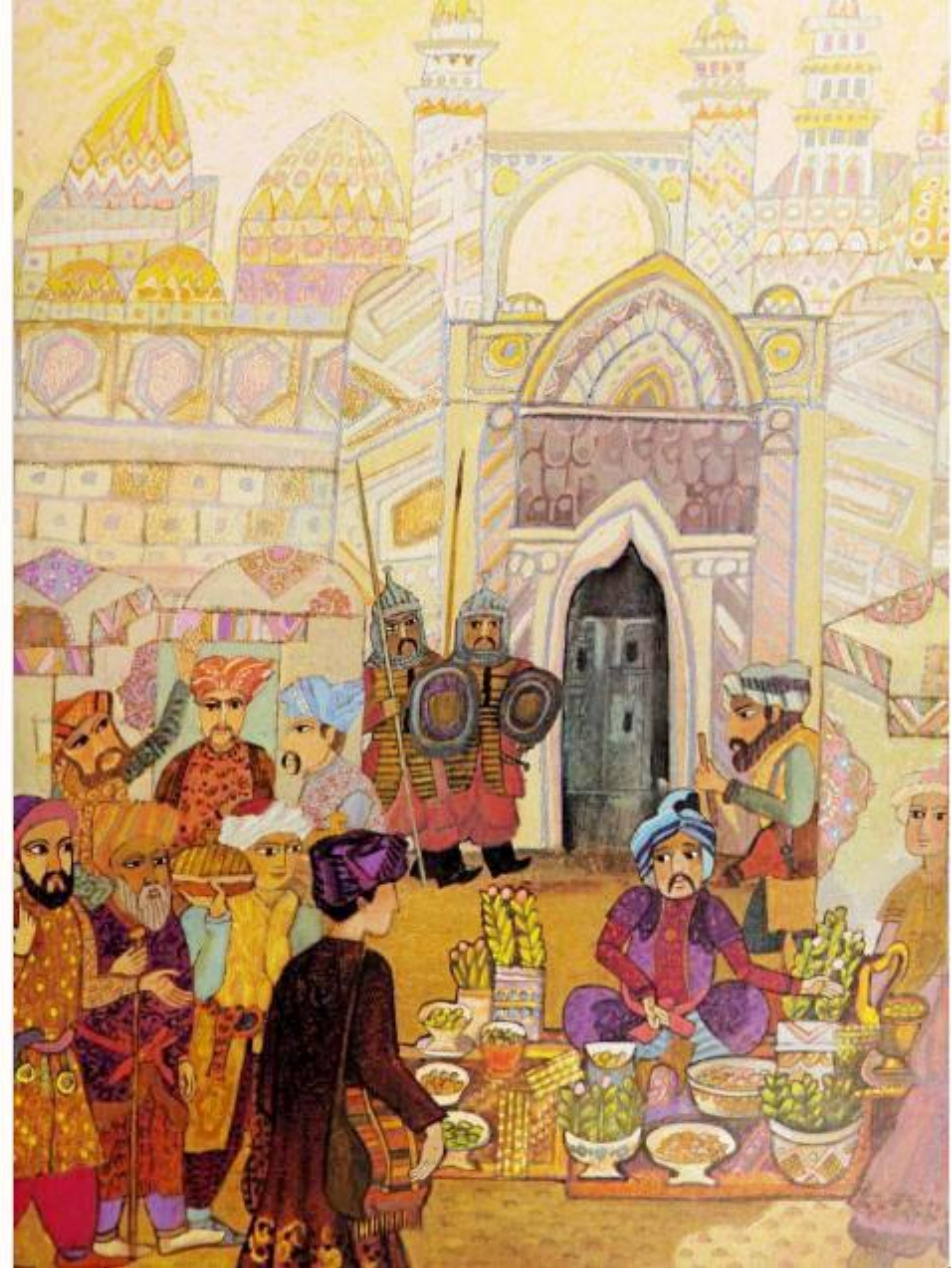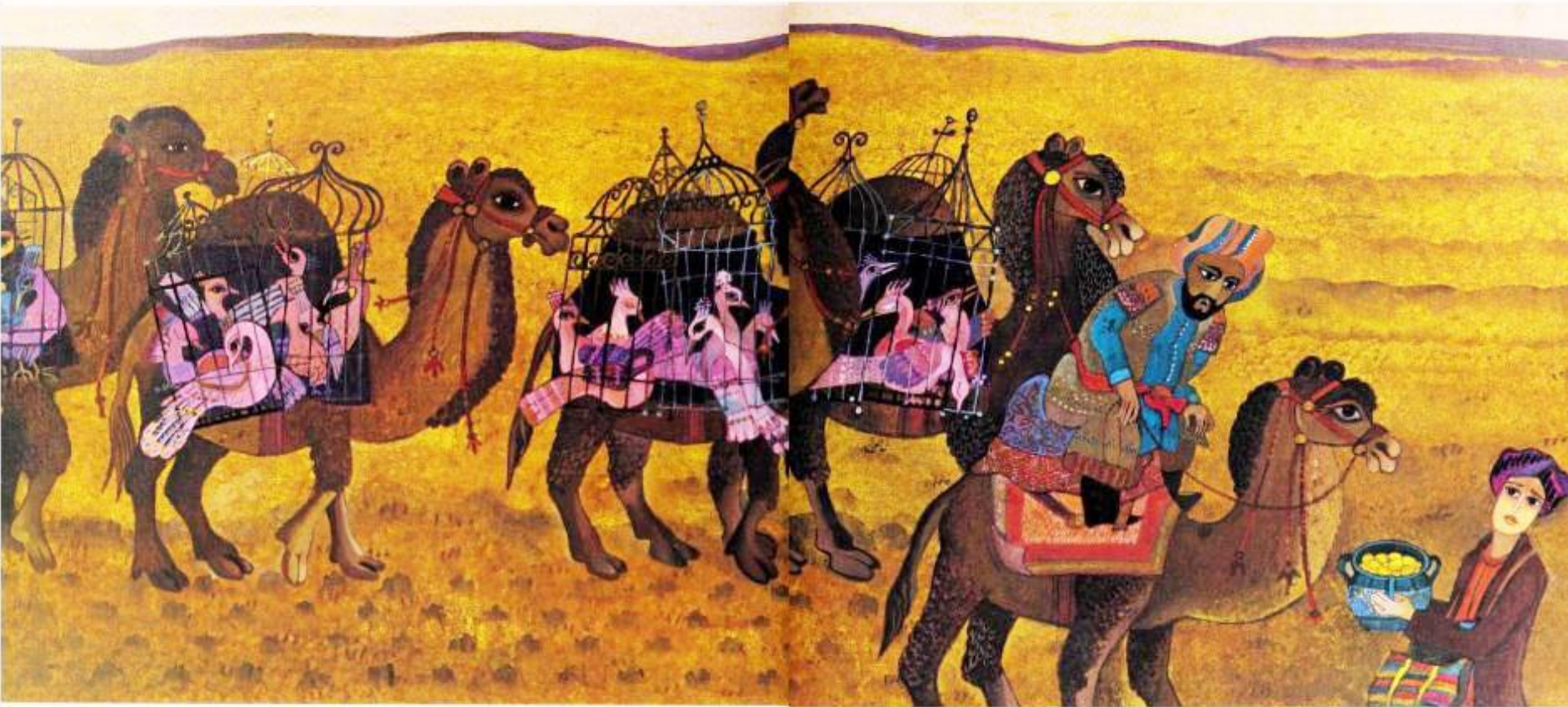
असन को विश्वास न हुआ-क्या इतने सुंदर पक्षी फिर आकाश में उड़ न पायेंगे? वह भाग कर काफिले के आगे आया. उसने काफिले को रोकने का प्रयास किया. लेकिन ऊँट चालक ने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया. काफिला आगे बढ़ता गया.

असन फिर भाग कर काफिले के सामने आ गया. वह रुका, कुछ पलों के लिए हिचकिचाया और फिर उसने निर्णय ले लिया. तपती धूप में जब सोने के सिक्के चमकने लगे तो ऊँट चालक रुक गया. पक्षियों की स्वतंत्रता के बदले में असन ने सोने के सारे सिक्के उसे दे दिए.

देखते ही देखते ऊँट चालकों ने सारे पिंजरे असन के पास ज़मीन पर रख दिए. हर पिंजरे में कैद पक्षी बेताबी से स्वतंत्रता के लिए चिल्ला रहे थे. उसने बड़े उत्साह से उन पिंजरों के छोटे-छोटे दरवाज़े खोल दिए. सब पक्षी पिंजरों से निकल कर आकाश में उड़ गये.

रंग-बिरंगे पक्षियों से आकाश जगमगाने लगा. उनकी मीठी आवाज़ें आकाश में गूँजने लगीं. पक्षियों ने ख़ुशी से असन के ऊपर आकाश में कुछ चक्कर लगाए और फिर उड़ कर दूर चले गये. उनके जाने के बाद भी उनके चहकने की आवाजें असन को बहुत देर तक सुनाई देती रहीं.

प्रसन्नता से भरा असन घर के ओर चल दिया. लेकिन चलते-चलते उसके मन की प्रफुल्लता कम होने लगी. उसकी चाल धीमी हो गयी और मन भारी. क्या उसे सच में घर लौटना चाहिये? बिना बहुमूल्य बीजों के और बिना खज़ाने के, खाली हाथ वह घर कैसे जा सकता था?
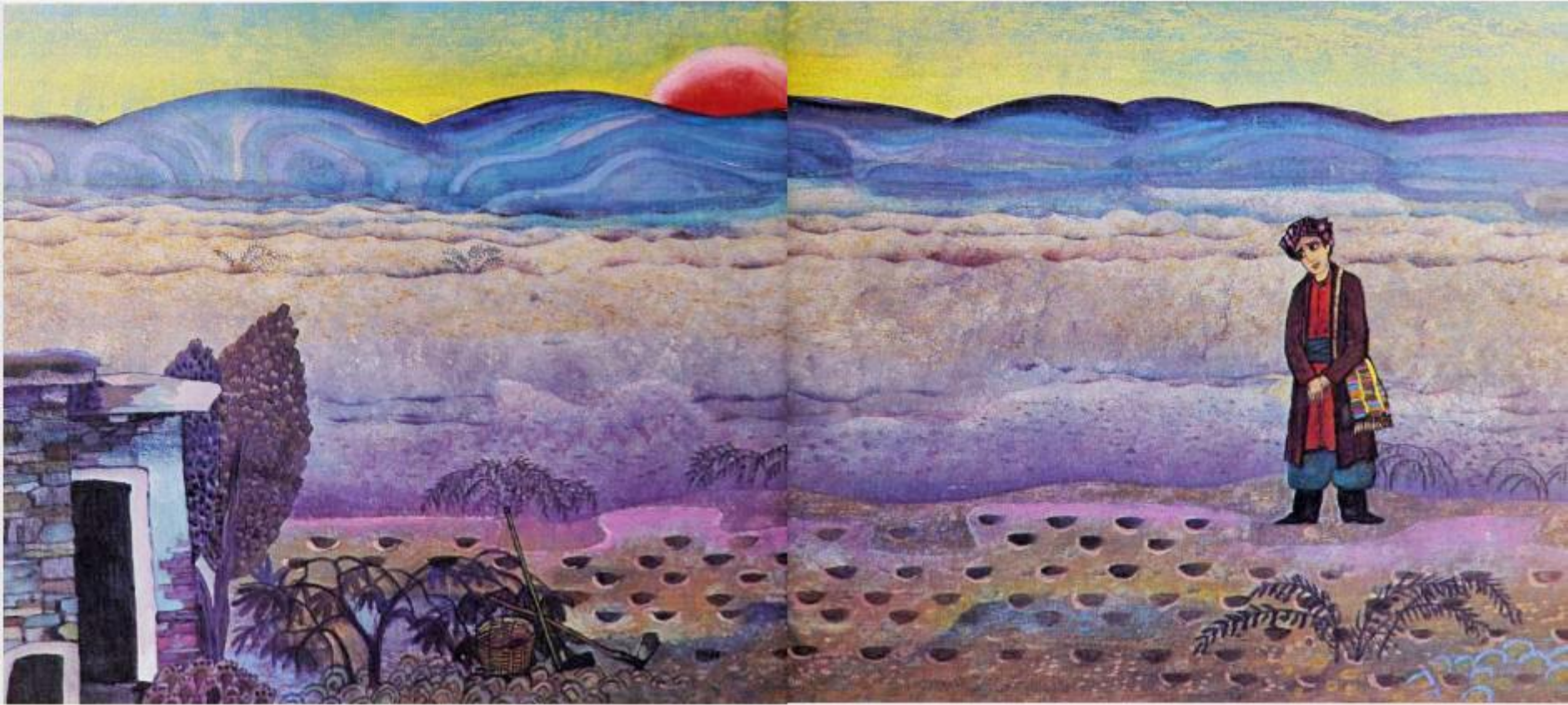
वह उन सब का सामना कैसे कर पायेगा? तपती धूप में पसीना बहा कर उन्होंने उपवन लगाने के लिए भूमि को तैयार किया होगा. उसे आता देख कर जब सब भाग कर उसके पास आये तो असन ने उन्हें सब सच-सच बता दिया- पिंजरों में बंद पक्षियों के बारे में जिन्हें मार कर खान के लिए पकाया जाना था, उनकी स्वतंत्रता के बारे में. उसने बताया कि पक्षियों को स्वतंत्र कराने के लिए उसने क्या किया था. दोनों वृद्धों और उबियाना को देख कर उसका मन ग्लानि से भर गया.

लेकिन उन्होंने एक भी बुरा शब्द न कहा. वह असन से नाराज़ न थे क्योंकि वह जानते थे कि वह भी वैसा ही करते. वह उस घास के विशाल मैदान के स्वतंत्र लोग थे. शाम के समय वह असन की यात्रा और सुंदर पक्षियों और उन अजीब, दूर-दराज़ जगहों के विषय में बातें करते रहे जहां लोग, दूसरों से छीन कर, अपना जीवनयापन करते थे.

अँधेरा होते ही सब घर चले गये, सिवाय किसान के. वह रुक कर सोचने लगा और उस जगह को एकटक देखने लगा जहां उपवन बनना था. उसने एक फावड़ा उठाया और एक गड्ढे को धीरे-धीरे भरने लगा. फिर वह अपने कुटिया के भीतर चला गया.

गड़ेरिया भी सो न पा रहा था. वह अपने पुत्र और उन अनोखे पेड़ों के विषय में सोच रहा था जिन्हें अगले दिन उन्होंने ज़मीन में लगाया होता. दोनों वृद्ध चुपचाप लेट गये. अकसर दोनों छायादार उपवन के विषय में आपस में बातें करते थे लेकिन उनके सुंदर सपने अब चूर-चूर हो गये थे. बहुत देर के बाद ही उन्हें नींद आई और और दुःखी विचारों से राहत मिली.

उबियाना भी बहुत देर तक जागती रही थी और पक्षियों के उन सुंदर पंखों को देखती रही थी जो असन ने उसे दिए थे. अपने मन की आँखों से वह उन सुंदर पर उदास पक्षियों को देख पा रही थी जिनके विषय में असन ने उसे बताया था.

सिर्फ असन था जो सो रहा था, वह शांत और संतुष्ट था.

आधी रात के समय ऐसी आवाज़ आई कि जैसे आंधी चल रही हो. हवा में पक्षियों के पंख फड़फड़ाने कि आवाज़ फ़ैल गयी. हर पक्षी ने अपनी चोंच में एक छोटी सी डाली पकड़ रखी थी. जैसे ही पक्षियों ने डालियाँ ज़मीन में लगाईं, उन डालियों से नये पत्ते निकलने शुरू हो गये. पक्षों के पंखों के फड़फड़ाने और पत्तों के निकलने की आवाज़ों से लग रहा था की रात गुनगुना रही थी. अपना काम पूरा करने के बाद पक्षी ज़मीन पर बैठ कर आराम करने लगे और भोर की प्रतीक्षा में सुंदर गीत गाने लगे.

असन अपने बिस्तर पर सीधा बैठ गया और बाहर से आती आवाजें सुनने लगा. फिर कूद कर वह घर से बाहर आया. उसे अपनी आँखों पर विश्वास न हो रहा था. क्या यह सत्य था या वह सपना देखा रहा था या फिर कोई चमत्कार हुआ था? अचानक उसके आँखों में आंसू आ गये. वह समझ गया कि यह एक उपहार था - एक आश्चर्यजनक, अप्रत्याशित और सुंदर उपहार.

अपने पूरे जीवन में उसने इतने पेड़ न देखे थे. पिछली रात वहां सिर्फ एक मैदान था जिसमें कई गड्ढे खुदे हुए थे. अब वहां एक सुंदर उपवन था जिसमें सुंदर, विशाल पेड़ थे जिन की जड़ें दूर तक फैली थीं और मज़बूत शाखायें आकाश को छू रही थीं. और हर पेड़ पर कई पक्षी बैठे चहचहा रहे थे- यह वही पक्षी थे जिन्हें असन ने बचाया था. असन को देख कर पक्षी और ज़ोर से चहचहाने लगे.

उबियाना और दोनों वृद्ध भी भाग कर उपवन में आये और उस सुंदर दृश्य को प्रसन्नता से देखने लगे. पक्षी भी प्रसन्नता से ऊपर आकाश में चक्कर लगाने लगे, उन्होंने उन चारों का स्वागत किया और फिर पेड़ों पर आकर चुपचाप बैठ गये. उस चुपी में बहते पानी की कलकल सुनाई दी. जिस जगह पर गड़ेरिये को छिपा हुआ खज़ाना मिला था वहीं से ठंडा, साफ़ पानी धरती से बाहर आ रहा था. पक्षियों ने यह पानी पी कर अपनी प्यास बुझाई, उन चारों ने भी वह पानी पिया. उबियाना नीचे झुकी और उसने उस निर्मल पानी में अपने हाथ भिगोये और प्रसन्नता से उसे यहाँ-वहाँ बिखेरा. जहाँ भी पेड़ों पर पानी की बूँदें गिरीं वहाँ फूल खिल गये. एक के बाद एक पेड़ों पर कलियाँ निकल आईं, फूल खिल गये और सारा उपवन हंसी और पक्षियों की चहचहाहट से गूँजने लगा.

लेकिन अचानक पक्षियों ने चहचहाना बंद कर दिया.

तभी खान के घुड़सवार दनदनाते हुए उस मैदान की ओर आये और उपवन के निकट आकर एकदम रुक गये. सिपाहियों ने निशाना साधा और तीर मारने के लिये तैयार हो गये. लेकिन तभी पेड़ों पर बैठे पक्षियों के चीखने-चिल्लाने की भयंकर आवाज़ें सुनाई दीं, जिन्हें सुन कर घोड़े भयभीत हो गये और अपनी अगली टांगें हवा में उठा कर पिछली टांगों पर घबराहट में आगे-पीछे हिलने लगे. घोड़ों को चाबुक से मारते हुए और अपशब्द कहते हुए सिपाहियों ने अपनी तलवारें निकाल लीं और उपवन की ओर तेज़ी से आये.

अचानक छोटी झाड़ियाँ और कांटेदार बेलें, घोड़ों की टांगों की ओर कूद कर आईं और घोड़ों की टांगों को पकड़ कर नोचने, काटने लगीं. घुड़सवार डर कर चिल्लाए और वहाँ से भाग खड़े हुए.

जैसे ही धूल के गुबार में घुड़सवार लुप्त हो गये, सब शांत हो गया. यह बड़ी सुख भरी शान्ति थी. फिर सब पक्षी चहचहाने लगे और लोग भी प्रसन्नता से तालियाँ बजाने लगे-आख़िरकार वह सब सुरक्षित और खुश थे.

ऐसा कहा जाता है कि हवा ने ही यह बात सब को बता दी कि उस विशाल मैदान में एक जादुई उपवन था जहाँ अद्भुत पेड़-पौधे थे, मीठा पानी था- एक ऐसी जगह जहां खान के घुड़सवार जाने से डरते थे. दूर-दूर से लोग वहां आने लगे लेकिन सब का वहां स्वागत न होता था. उन्हीं लोगों को वहां आश्रय मिलता था जो अच्छे विचारों वाले, भले लोग होते थे.

ऐसी मान्यता है कि अभी भी उनके बच्चे, बच्चों के बच्चे, और बच्चों के बच्चों के बच्चे वहीं उस उपवन में सुख से रहते हैं और वह किसी से भी भयभीत नहीं होते.

अंत